गोताखोर

मैं गोताखोर, मुझे गहरे जाना होगा
तुम तटपर बैठे भंवरकी बातें किया करो !

मैं पहला खोजी नहीं अगम भवसागर का
मुझसे पहले इसको कितनोंने ठाहा हैं
तलके मोती खोजे, परखे, बिखराये हैं
डुबे हैं पर मिट्टी का कौल निबाहा हैं

मैं भी खोजी हूं, मुझमे इनमे भेद यहीं
मैं सबसे महंगे उस मोती का आशिक हूं
जो मिला नहीं वो पा लेने की धून मेरी
तुम मिला सके तो घरकी बातें किया करो
कोई बोझा अपने सिर पर मत लिया करो

मैं गोताखोर, मुझे गहरे जाना होगा
तुम तटपर बैठे भंवरकी बातें किया करो !(१)

पथ पर सब चलते हैं, चलना पडता हैं
पर मेरे चरण नया पथ चलना सिखे हैं
तुम हसों पर मेरा विश्वास न हारेगा
जीने के अपने अपने अलग तरीके हैं !

जिस पथ पर कोई पैर निशानी छोड गयां
उस पथ पर चलना मेरे मन को रुचा नहीं
काटे रौ दूंगा अपनी राह बनाऊंगा !
तुम फुलों भरी डगर की बातें किया करो
जीवनमें हरदम काटोंसे बचा करो !

मैं गोताखोर, मुझे गहरे जाना होगा
तुम तटपर बैठे भंवरकी बातें किया करो !(२)

नैनोंके तीखें तीर कुंतलोकी छाया
मन बांध रही जो यहां रंगो की डोरी हैं
इन गिली गलीयों में भरमाया कौन नहीं
यहां भूख आदमीकी सचमुच कमजोरी हैं !

पर अपने पर विजय जिसने नहीं पायी
मैं उनको कायर कहता हूं, पशू कहता हूं
बस इसलिये मैं वीरानोंमें रहता हूं
तुम जादूभरे नगर की बातें किया करो
जब जब हो जरा उतार, पी लिया करो

मैं गोताखोर, मुझे गहरे जाना होगा
तुम तटपर बैठे भंवरकी बातें किया करो !(३)

पथ पर चलते उस रोज बहार मिली मुझे
बोली, "गायक मैं तुमसे ब्याह रचाऊंगी
ऐसा मनमौजी मिला नहीं दुजा कोई
जगके सारे फुल तुम्हारे घर ले आऊंगी" !

मैं बोला, "मेरे प्यार, सदा तुम सुखी रहो,
मेरे मनको कोई बंधन स्विकार नहीं"
तबसे बहार से मेरा नाता टूट गया !
तुम फुलोंको झोली में अपनी रख लिया करों
मुझसे केवल पतझडकी बातें किया करो !

मैं गोताखोर, मुझे गहरे जाना होगा
तुम तटपर बैठे भंवरकी बातें किया करो !(४)

– "हिमालय के आंसू" से संग्रहित